IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''ग्रामीणों के आर्थिक विकास में भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) का योगदान''

शोधार्थी

मंदाकिनी चन्द्रा

वाणिज्य विभाग

पं. रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय

रायपुर छ.ग.

शोध निर्देषक

डॉ. विजय कुमार अग्रवाल

प्राध्यापक वाणिज्य विभाग

पं. रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय

रायपुर छ.ग

शोध सारांष

भारत गाँवों का देष है। इसकी अधिकतर जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। कहा जाता है कि वास्तविक भारत ग्रामों में निवास करता है। ग्रामीण क्षेत्र अपनी सादगी एवं पारंपरिक रीति–रिवाजों से ओत–प्रोत है, जो इसकी सांस्कृतिक संपन्नता तो है परंतु कई बार आधुनिक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग बढ़तें चरणों में यह इसकी बाधक भी साबित होती है। ग्रामीण क्षेत्र प्रायः शहरी क्षेत्रों से कम संपर्क में होते है अतः देष की शहरी विकास की तुलना में ग्रामीण विकास कम ही होता है। ग्रामीण विकास का अर्थ ग्रामीण जनों के जीवन में गुणात्मक उन्नति हेतु सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिक एवं संरचनात्मक परिवर्तन करता है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए विविध कार्यक्रमों जैसे – कृषि, पषुपालन, ग्रामीण हस्तकला एवं उद्योग, लघुकुटीर उद्योग, ग्रामीण मूल संरचना में बदलाव आदि के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों का विकास किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान कर, शैक्षणिक एवं चिकित्सीय सुविधाओं में विकास कर भी उनके जीवन स्तर को सुधारा जा सकता है। ऐसा करने से ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर ग्रामीणों का पलायन भी स्वतः ही रूक जायेगा।

औद्योगिक देषों की दौड़ में अब भारत भी कुषल धावक की भाँति निरंतर आगे बढ़ता हुआ प्रतीत हो रहा है। नित नवीन आयाम उद्योगों की स्थापना एवं क्षमताओं तथा उत्पादन में देखे जा सकते हैं। भारत एक प्रजातांत्रिक देष है, जिसकी पहली प्राथमिकता 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' है। यहाँ स्थापित प्रत्येक उपक्रम सामाजिक कल्याण एवं विकास को भी अपना एक निष्चित दायित्व मानकर कार्य करती है।

वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य का कोरबा जिला, जिसे राज्य की ऊर्जाधानी के नाम से भी जाना जाता है, यह कोयले के साथ ही साथ एक एल्युमिनियम के उत्पादन में भी अग्रणी है। राज्य का एकमात्र एवं देष की सबसे बड़ी एल्युमिनियम उत्पादन कंपनी भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) की स्थापना इसी क्षेत्र में की गई है। कोरबा जिले का यह क्षेत्र वनाच्छादित एवं पहाड़ी कोरबा आदिवासियों का बहुत ही पिछड़ा क्षेत्र था, जहाँ के लोग प्रायः वनोपज संग्रहण एवं कृषि कार्य से जीवनयापन करते थे। परंतु वर्ष 1965 से बाल्को की स्थापना के पष्चात् इस क्षेत्र का पूर्ण रूप से कायाकल्प हो गया। इस क्षेत्र की स्थिति एवं लोगों के जीवन स्तर में अमूल्य परिवर्तन हुआ। बाल्को की स्थापना ने इस ग्रामीण क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में परिवर्तन के सारे द्वार खोल दिये। लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार हुआ। इस बाल्को संयंत्र के आस–पास बसे लगभग सवा लाख नागरिक इस संयंत्र की प्रगति से जुड़े हुए है। बाल्को द्वारा लोगों के स्वास्थ्य, षिक्षा, स्वावलंबन, आधारभूत संरचना विकास आदि के अनेक कार्य राज्य117 गाँवों में संचालित है। परियोजना कनेक्ट, जलग्राम, वेदांता एग्रीकल्चर रिसोर्स सेंटर, दिषा, वेदांता स्किल स्कूल, वेदांता चिकित्सालय, उन्नति आदि जैसी अनेक परियोजनाएँ बाल्को द्वारा संचालित है, जिसने विद्यार्थियों किसानों एवं महिलाओं के विकास के रास्ते खोल दिये है।

मुख्य शब्द

ग्रामीण विकास, शहरीकरण, बाल्को ग्रामीण विकास रोजगार।

प्रस्तावना

एक लंबे समय से भारत गाँवों का देष कहलाता आ रहा है क्योंकि प्रारंभिक राष्ट्रीय जनगणना ने जो स्थिति प्रकट की उसमें भारत में ग्रामीण जनसंख्या रोजगार शहरी के अपेक्षा आधिक थी अतः लोगों की अवधारणा आज भी यही बनकर जलती है। परंतु शहरीकरण एक ऐतिहासिक बदलावाव लेकर आया है। ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या के अनुपात में भी अमूल्य परिवर्तन हुए है। देष के इतिहास में वर्ष 2005 भारत को एक एसे मुकाम पर ले आया था जहाँ शहरी आबादी देष के ग्रामीण आबादी से अधिक हो गई थी। और आने वाले दस वर्षों के आकलन में भी यह समझ में आया कि यदि जनसंख्या वृद्धि दर नहीं रही तो वर्ष 2028 में भारत विष्व सर्वाधिक जनसंख्या वाले देष चीन को भी पीछे छोड़ते हुए प्रथम स्थान पर आ जायेगा। साथ हमारा देष सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला देष भी बन जायेगा। यह आकलन संयुक्त राष्ट्र की वर्ष 2013 की जनसंख्या रिपोर्ट का है।

भारत में अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने–बाने दोनों को ही यदि विचार किया जाये तो पिछले कुछ दषकों से गाँवों से शहरों की ओर पलायन एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। इस पलायान का मुख्य कारण है ग्रामीण इलाकों में रोजगार की कमी एवं जीवन की मूलभूत आवष्यकताओं जैसे–षिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी आदि की कमी है। यदि युवाओं के पास करने को काम नहीं हो तथा जिंदगी की सहुलियत का सामान न हो तो वह विकास नहीं कर सकता अतः वह इन क्षेत्रों (षहरी) की ओर पलायन के लिए मजबूर होता है। उच्च ग्रामीण साक्षरता एवं शैक्षिक स्तर में सुधार ही प्रायः गाँव से शहर प्रवास को बढ़ाता है। शहरी क्षेत्रों में जाने से ग्रामीणों को बेहतर आजीविका का अवसर मिल पाते है, और उनकी गरीबी में कमी आती है।

भारत में विषेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक आर्थिक विकास में निजी क्षेत्रों का योगदान भी उल्लेखनीय है। ग्रामीण भारत के विकास में निजी क्षेत्रों एवं उद्योगों के योगदान को निम्न दो प्रकार से समझा जा सकता है – पहला विभिन्न संस्थानों चाहे वह प्राकृतिक संसाधन हो जैसे वायु, जल, प्राकृतिक गैस, धातु, लोहा, कोयला, लकड़ी, तेल इत्यादि हो या फिर मानव निर्मित सूचना प्रौद्योगिकी, करखानों, सड़क आदि हो। इनके समुचित उपयोग से विभिन्न दैनिक जीवन उपयोगी वस्तुओं के निर्माण एवं सेवाओं के द्वारा निजी क्षेत्र जनसामान्य के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाते है।

इसी प्रकार दूसरा यह है कि निजी क्षेत्र अपने सामाजिक उत्तरादायित्व द्वारा ग्रामीण भारत में विभिन्न क्षेत्रों जैसे– षिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, पोषण, आजिविका इत्यादि में अनेक गतिविधियों के माध्यम से लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान देते है। भारत दुनिया में पहला ऐसा देष है जहाँ निजी क्षेत्र, कानूनन कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के अंतर्गत अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को अनिवार्य रूप से पूरा करता है। भारतीय कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135 के प्रावधान के अनुसार, 500 करोड़ रूपये से अधिक की कुल संपत्ति, 1000 करोड़ रूपये से अधिक का कारोबार या 5 करोड़ रूपये से अधिक का लाभ कमाने वाली कंपनियों को अपने वार्षिक लाभ का कम से कम 2 प्रतिषत खर्च कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत करना आवष्यक हैं।

भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) की एक इकाई कोरबा छत्तीसगढ़ में स्थापित है। इस कंपनी द्वारा कोरबा एवं विषेषकर बाल्को क्षेत्र के आसपास के बसाहटों को विकसित करने में विषेष योगदान है बाल्को एक एल्युमिनियम उत्पादक कंपनी है, जिसकी स्थापना सन् 1965 में कोरबा (तत्कालीन म.प्र.) में एक सार्वाजनिक क्षेत्र की कंपनी के रूप में की गई। यह कंपनी स्थापित क्षमता के साथ–साथ समय बीतने पर अपनी उत्पादन क्षमता में निरंतर विकास करती जा रही है। सरकार द्वारा नवीन औद्योगिक नीति 1991 के लागू होने के फलस्वरूप निजी क्षेत्रों का औद्योगिकरण में विषेष रूझान उत्पन्न हो गया है। सरकार द्वारा औद्योगिक विकास में सुधार करते हुए विनिवेष पर विषेष जोर दिया जाने लगा। फलतः बहुतायत कंपनियों का निजीकरण हो गया। इसी श्रृंखला में सन् 2001 में भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड जिसे बाल्को नाम से संक्षिप्त रूप में जाना जाता है का भी निजीकरण हो गया। बाल्को के पूंजी ममें 51 प्रतिषत हिस्सा भारत सरकार द्वारा निजी हाथों में बेच दिया गया तथा 49 प्रतिषत हिस्सेदारी स्वयं के पास रखी गई। बाल्को कंपनी के नीलामी में सर्वाधिक बोली लगाकर ऐसा इस्टरलाईट कंपनी जो कि वेदांता ग्रुप ऑफ कंपनीज की एक सहायक कंपनी है द्वारा खरीदी गई। यह कंपनी लंदन स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टेड है। यह कंपनी कोरबा जिला, छत्तीसगढ़ में परसाभांठा नामक गाँव में स्थित है। आज बाल्को विकास की ओर अग्रसर होते हुए एक साल में 5,70,000 टन एल्युमिनियम बनाने वाली इकाई बन गई है। देष के कुल एल्युमिनियम उत्पादन में बाल्को का योगदान 15 फिसदी के लगभग है। बाल्को से विकास के साथ ही इसके आसपास बसे सवा लाख ग्रामीणों की भी प्रगति इस संयंत्र के माध्यम से हो रही है।

बाल्को नगर की स्थापना

भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) की स्थापना कोरबा क्षेत्र (तत्कालीन म.प्र.) में की गई। यह क्षेत्र एक वनांचल एवं अदिवासी जनजाति पहाड़ी कोरबा पिछड़ी जनजाति निवास करती है। जिनका प्रमुख कार्य वनोपज संग्रहण एवं लघुमात्रा में कृषि था। वनांचल क्षेत्र होने के कारण यह शहरी सुविधाओं जैसे परिवहन, तकनीकी, चिकित्सा आदि के अभाव में था जिससे लोगों का जीवन स्तर काफी पिछड़ा हुआ था किसी भी उद्योग की स्थापना के लिए मूलभूत साधनों की उपलब्धता जैसे – कच्चा माल, आवागमन के साधन, जमीन, जल, विद्युत पूर्ति आदि महत्वपूर्ण होती है। अतः बाल्को की स्थापना के समय कच्चे माल के रूप में फुटका पहाड़ बाक्साईट की प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। हसदेव नदी एक जल की विषाल स्रोत एवं छ.ग.वि.मं. कंपनी द्वारा आसानी से बिजली की आपूर्ति संभव थी। अतः इस कंपनी की स्थापना की गई।

बाल्को की स्थापना के लिए इस क्षेत्र की वह जमीने जिनमें जंगल थे एवं कुछ जमीनों जिसमें क्षेत्रीय लोगों का स्वामित्व था के प्रयोग में लाया गया। ऐसे परिवार जिनकी जमीनों एवं कृषि क्षेत्रों को कंपनी द्वारा हस्तांतरित किया गया उन्हें मुआवजे के रूप में एक बड़ी राषि प्रदान की गई। भूविस्थापितों को धनराषि के साथ–साथ कंपनी में नौकरी भी दी गई। बाल्को कंपनी की सुविधा के लिए सामग्रियों के आवागमन के लिए सड़कों का निर्माण किया गया जिससे सड़क व्यवस्था आयी। बाल्को द्वारा अपनी उत्पादन को बाजार तक पहुँचाने के लिए रेल्वेलाईन भी बिछाई गई। बाल्को में कार्य करने वाले श्रमिक मुख्यतः इन्ही ग्रामीण क्षेत्रो के होते है। अतः ग्रामीणों को रोजगार का एक प्रमुख साधन एवं सुनहरा अवसर बाल्को की स्थापना से प्राप्त हुआ।

बाल्को द्वारा एक कॉलोनी बसाकर कंपनी में कार्य करने वाले आधिकारी एवं कर्मचारियों की रहने की व्यवस्था की गई यह कॉलोनी जितने दूर में फैला है उसे ही बाल्को नगर के नाम से वर्तमान में जाना जाता है। इस कॉलोनी में रहने वाले लोगों की मूलभूत आवष्यकताओं की पूर्ति करने के लिए विभिन्न प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की भी स्थापना की गई। समय के साथ ही बाजार की व्यवस्था एवं कोरबा मुख्य नगर से इसका जुड़ाव हो गया। इस प्रकार बाल्को नगर एक विकसित नगर में परिवर्तित हो गया। आज बाल्को में स्वयं का अस्पताल, डाकघर, बैंक शाखा, सामान्य वस्तुओं की दुकाने आदि उपलब्ध है, जो कि इस नगरीय आवष्यकता की पूर्ति करते हैं।

ग्रामीण आर्थिक विकास

ग्रामीण आर्थिक विकास से तात्पर्य ग्रामीणों की आय में वृद्धि एवं सुधार से है। ग्रामीण क्षेत्र में आय का मुख्य साधन कृषि एवं वनोपज होते हैं जो प्रायः प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित होते है, जिससे प्राकृतिक आपदाओं आदि परिस्थितियों में परिवर्तन का ग्रामीणो की आय में विषेष असर पड़ता है। ग्रामीणों की आय में संतुलन बनाये रखने एवं वित्तीय संतुलन बनाये रखने के लिए यह आवष्यक है कि उनके नियमित एवं उचित आय अर्जन की व्यवस्था की जाये। ऐसे में विभिन्न उद्योगों की स्थापना इन ग्रामीण क्षेत्रों में होने से युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होते है। जिससे उनकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ होती है।

बाल्को की स्थापना से आसपास क्षेत्रों के लागों को रोजगार की प्राप्ति हुई जिससे उनकी आय में नियमितता आयी एवं लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठने लगा। बाल्को द्वारा सड़क परिवहन व्यवस्था आदि के विकास ने इस क्षेत्र के ग्रामीणों को शहरी बाजार से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ दिया जिससे वे अपने लघु एवं कुटीर उत्पादों को सीधे बाजार में ले जाकर बेच सकते है।

भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) द्वारा ग्रामीण क्षेत्रो के हित में उठाये गये कदम

बाल्को कंपनी निरंतर विकस के पथ पर अग्रसर हो रही है। बाल्को की स्थापना से कोरबा में व्यवसायियों की आमदनी को भी वृद्धि हुई है। वेदांता समूह द्वारा पिछले एक दषक में बाल्को से अर्जित लाभ का अधिकांष हिस्सा पुनः बाल्को में विनियोजित कर दिया गया है। औद्योगिक स्वस्थ्य सुरक्षा एवं पर्यावरण प्रबंधन क्षेत्र में भी बाल्को प्रगति की ओर अग्रसर है। बाल्को ''षून्य क्षति, शून्य अपषिष्ट एवं शून्य उत्सर्जन की नीति पर कार्य करती है। अनेक स्वयं सेवी, धार्मिक एवं समाजिक संगठनों को पर्यावरण एवं संवर्धन कार्यक्रम में सहयोगी बनाया गया हैं। वायु की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए बाल्को द्वारा अत्याधुनिक फ्यूम ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना की गई है। फ्लाई–एष के निपटारे के लिए अत्याधुनिक हाई कंसेट्रेषेनलरी डिस्पोजल सिस्टम (HCSD) का प्रयोग किया जाता है। फ्लाई ऐष के 100 फीसदी उपयोग यूटिलाइजेषन फ्लाई ऐष अधिसूचना के अंतर्गत किया जाता है। इससे निकलने वाले जैविक अपषिष्ट के निपटारे के लिए सॉडिलड एक लिक्विड रिसोर्स मेंटर (SRLM) भी स्थापित है। इससे जैविक अपषिष्ट को कंपोस्ट में बदलने में मदद मिलती है। संयंत्र में आसपास के क्षेत्रों में हरा–भरा वातावरण बनाये रखने के लिए साढ़े पाँच लाख से अधिक पौधे रोपे गये है। स्मेल्टर के प्रचालन में प्रयोग होने वाले जल का 100 प्रतिषत जल पुनःचक्रण करना भी सुनिष्चित हैं।

बाल्को द्वारा ग्रामीणों के विकास के लिए उठाए गये प्रमुख कदम है –:

- प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना।
- 75 बिस्तरों वाले अस्पताल की स्थापना।
- बाजार, बैंक शाखा, डाक शाखा, ए.टी.एम. की स्थापना।
- उच्च षिक्षा ग्रहण हेतु शहरी महाविद्यालयों तक पहुँच के लिए बस सेवाएँ।
- गंभीर बीमारियों के लिए रायपुर में 100 बिस्तरीय अस्पताल की स्थापना।
- बाल्को में डिजिटाइजेषन को बढ़ावा दिया गया।
- विभिन्न ग्रामों को गोद लेना शासकीय स्कूलों, आँगनबाड़ियों आदि का विकास करना।
- महिला स्व–सहायता समूहों को ऋण देना एवं रोजगार उपलब्ध कराना।
- कोविड–19 के समय विषेष जागरूकता कर्यक्रमों का संचालन।
- युवा कौषल विकास प्रषिक्षण केन्द्र की स्थापना।
- कंपनी द्वारा सामुदायिक विकास योजना का संचालन। इत्यादि।

निष्कर्ष एवं उपसंहार

भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेषक श्री अभिजीत पति के शब्दों में कर्मचारियों एवं परिसंपत्तियों की सुरक्षा बाल्को के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कंपनी में कार्यरत कर्मचारियों के सुरक्षा कौषल विकास एवं स्वास्थ्य सेवाओं पर भी विषेष ध्यानाकर्षण किया जाता है। वेदांता ग्रुप ऑफ कंपनीज द्वारा छत्तीसगढ़ में अत्याधुनिक कैंसर अस्पताल की भी स्थापना की गई है जिसमें 170 बिस्तरों वाले बाल्को मेडिकल सेंटर में कैंसर चिकित्सा की सुविधा मौजूद है। कंपनी की स्वास्थ्य, षिक्षा, स्वावलंबन, आधारभूत संरचना विकास आदि के कार्य राज्य 114 गाँवों में संचालित हैं।

परियोजना कनेक्ट, जलग्राम, वेदांता एग्रीकल्चर रिसोर्स सेंटर, दिषा, वेदांता स्किल स्कूल, उन्नति जैसी अनेक परियोजनाओं ने इस क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों, किसानों और गृहणियों के लिए विकास के रास्ते खोलें है। कंपनी की सामुदायिक विकास परियोजना 'मोर जला मोर माटी' का प्रमुख उद्देष सिंचाई सुविधाओं को बढ़ाने, फसल उत्पादन में वृद्धि, फसल उत्पादन में वृद्धि, कृषकों को नवीन तकनीकों की जानकारी देना एवं मृदा प्रबंधन का संवर्द्धन करना है। परियोजना के मुख्य घटक में कृषि, जल प्रबंधन, पषुपालन, मत्स्यपालन, वनोपज एवं वनसंरक्षण और लाख की खेती शामिल है।

उपरोक्तानुसार बाल्को द्वारा अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन निरंतर किया जा रहा है। जिससे इन क्षेत्र के ग्रामीण लाभान्वित हो रहे। लोगों को रोजगार, षिक्षा एवं विकास के अनेक अवसरों की प्राप्ति हो रही है, जिससे उनका जीवन स्तर भी सुधर रहा हैं। उपरोक्त सभी पहलुओं पर गौर करने पर और समझने पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में निजी क्षेत्र की कंपनी भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बाल्को) की अहम भूमिका है। बाल्को द्वारा की जाने वाली गतिविधियों से नये एवं विकसित भारत के निर्माण में सामाजिक विषमताओं जैसे गरीबी, बेरोजगारी आदि को दूर करने में सहायक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. आर.एस. कुलक्षेत्र — भारत में उद्योगो का प्रबंध एवं वित्त, साहित्य भवन , आगरा 1998
2. डॉ. प्रमिल कुमार — म.प्र. एक भौगोलिक अध्ययन, म.प्र.हि.ग्र. अकादमी भोपाल, 1997
3. पत्रिका — कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास को समर्पित (ग्रामीण गैर–कृषि क्षेत्र) मासिक पत्रिका ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रकाषित
4. पत्रिका — योजना, विकास को समर्पित (षहरीकरण), मासिक पत्रिका, सूचना भवन द्वारा प्रकाषित, नई दिल्ली
5. Website – balcoindia.com
6. Website – Vedantaindia.com
7. Balco – Annul Report